

महात्मा गांधी के राजनीतिक विचारों में भारतीय ज्ञान परंपरा की भूमिका

डॉ. नरेन्द्र कुमार

सह आचार्य (राजनीति विज्ञान)

राजकीय डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर (राज.)

डॉ. सिद्धार्थ राव

सहायक आचार्य (राजनीति विज्ञान)

राजकीय नेहरू मेमोरियल महाविद्यालय, हनुमानगढ़ (राज.)

सारांश

प्रस्तुत शोध-पत्र में महात्मा गांधी के राजनीतिक विचारों में भारतीय ज्ञान परंपरा की बुनियादी, वैचारिक तथा आध्यात्मिक भूमिका का विश्लेषण किया गया है। गांधी के चिंतन की जड़ें वेद-उपनिषदों, भगवद्गीता, जैन-बौद्ध दर्शन, भक्ति परंपरा तथा भारतीय लोक-नैतिकता में गहराई से निहित हैं। उनके सत्य, अहिंसा, आत्मशक्ति, स्वराज, स्वदेशी, जन्मेजममोपच तथा ग्राम-स्वराज जैसे सिद्धांत किसी पश्चिमी राजनीतिक सिद्धांत से उत्पन्न नहीं बल्कि भारतीय दार्शनिक परंपरा की जीवंत धारा से पोषित हैं। यह शोध दर्शाता है कि गांधी का राजनीतिक दर्शन मूलतः नैतिक-आध्यात्मिक राजनीति पर आधारित है जिसमें राजनीति को सेवा, करुणा, आत्मअनुशासन और नैतिकता का विस्तार माना गया है। अध्ययन यह भी स्पष्ट करता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा ने गांधी के राजनीतिक व्यवहार, जन-आंदोलनों, सामाजिक सुधारों तथा राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम की रणनीतियों को दिशा देने में विशिष्ट योगदान दिया। इस प्रकार गांधीवादी राजनीति, भारतीय सांस्कृतिक चेतना की निरंतरता और आधुनिक समाज के लिए प्रासंगिक मूल्य-व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करती है।

मुख्य शब्द: महात्मा गांधी, भारतीय ज्ञान परंपरा, सत्य, अहिंसा, स्वराज, स्वदेशी, जन्मेजममोपच, भगवद्गीता, जैन-बौद्ध दर्शन, नैतिक राजनीति, गांधीवादी चिंतन, भारतीय दार्शनिक परंपरा, आत्मशक्ति, ग्राम-स्वराज

प्रस्तावना

महात्मा गांधी आधुनिक भारत के इतिहास में केवल एक राजनीतिक नेता नहीं बल्कि एक ऐसे नैतिक-दार्शनिक चिंतक के रूप में प्रतिष्ठित हैं जिन्होंने राजनीति को आध्यात्मिकता, नैतिकता और मानवीय मूल्यों के साथ जोड़ा। गांधी के राजनीतिक विचारों की जड़ें भारतीय ज्ञान परंपरा में इतनी गहराई से निहित हैं कि उनके चिंतन को इस परंपरा से अलग करके समझा ही नहीं जा सकता। भारतीय ज्ञान परंपरा-जिसमें वेद, उपनिषद, भगवद्गीता, जैन-बौद्ध दर्शन, भक्ति आंदोलन, लोक-विश्वास और सांस्कृतिक नैतिकता सम्मिलित हैं-ने गांधी के व्यक्तित्व, राजनीति, समाज-सुधार और संघर्ष-पद्धति को आधार प्रदान किया। सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, करुणा, आत्मसंयम, निष्काम कर्म, स्वराज, स्वदेशी और जन्मेजममोपच जैसे गांधीवादी सिद्धांत भारतीय दार्शनिक परंपराओं की उस निरंतर धारा से उपजे हैं जो मानव जीवन को केवल बाह्य शासन व्यवस्था तक सीमित न रखकर उसे आंतरिक नैतिक अनुशासन, आत्मोपलब्धि और सामाजिक कल्याण से जोड़ती है।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान गांधी का उदय किसी राजनीतिक रणनीतिकार की भांति नहीं बल्कि एक ऐसे नैतिक नेता के रूप में हुआ जिसने राजनीति को 'सत्य की खोज' और 'धर्म का आचरण' माना। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि राजनीति यदि नैतिकता से विहीन हो जाए तो वह केवल सत्ता प्राप्ति का साधन बनकर रह जाती है इसलिए उन्होंने भारतीय राजनीति में सत्य और अहिंसा को केन्द्रीय तत्व के रूप में प्रतिष्ठित किया। यह अवधारणा पश्चिमी राजनीतिक परंपरा की देन नहीं थी बल्कि भारतीय आध्यात्मिक चिंतन की आत्मा से प्रसूत थी। गांधी का यह विश्वास कि "सत्य ही ईश्वर है" उपनिषदों की उस मूल भावना से प्रेरित था जहाँ सत्य को ब्रह्म का स्वरूप माना गया है। इसी प्रकार अहिंसा को उन्होंने केवल संघर्ष की रणनीति नहीं बल्कि जीवन का सर्वोच्च नैतिक नियम माना जो जैन और बौद्ध दर्शन से गहराई से सम्बद्ध है।

गांधी का राजनीतिक दर्शन मूलतः नैतिक राजनीति का दर्शन है जो यह मानता है कि समाज का वास्तविक परिवर्तन केवल संरचनात्मक सुधारों से नहीं बल्कि व्यक्ति के नैतिक और आध्यात्मिक विकास से संभव है इसीलिए उन्होंने 'स्वराज' को राजनीतिक स्वतंत्रता से आगे बढ़ाकर 'आत्मशासन' के रूप में

परिभाषित किया। उनके लिए स्वराज व्यक्तिगत आत्मानुशासन, सामाजिक उत्तरदायित्व और सामुदायिक सहभागिता का समन्वित रूप था जिसका स्पष्ट प्रभाव भगवद्गीता के कर्मयोग और निष्काम भाव से मिलता है। इसी प्रकार 'स्वदेशी' और 'खादी आंदोलन' भारतीय लोक-संस्कृति, परंपरागत श्रम-मूल्य और आत्मनिर्भरता के सिद्धांतों से प्रेरित थे जो प्राचीन भारतीय आर्थिक-नैतिक धारणाओं की पुनर्व्याख्या थे।

राजनीति, अर्थव्यवस्था और समाज सुधार के क्षेत्रों में गांधी ने जिस प्रकार भारतीय ज्ञान परंपरा से प्राप्त मूल्यों को व्यवहार में उतारा वह उन्हें एक विशिष्ट चिंतक और कर्मयोगी बनाता है। उनका मानना था कि भारतीय समाज की जड़ों में ही वह आध्यात्मिक शक्ति निहित है जो सत्याग्रह जैसे शांतिपूर्ण प्रतिरोध को संभव बनाती है। गांधी का राजनीतिक व्यवहार-चाहे असहयोग आंदोलन हो, नमक सत्याग्रह हो या अस्पृश्यता उन्मूलन इन सभी में भारतीय ज्ञान परंपरा की नैतिक-सांस्कृतिक छाप स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। यही कारण है कि उनका राजनीतिक चिंतन मात्र एक ऐतिहासिक घटना नहीं बल्कि भारतीय सांस्कृतिक चेतना की शाश्वत निरंतरता के रूप में देखा जाता है।

समकालीन वैश्विक परिदृश्य में जब राजनीति हिंसा, स्वार्थ, उपभोक्तावाद और सत्ता-प्रतिस्पर्धा की ओर अग्रसर है, गांधीवादी राजनीतिक विचार पुनः प्रासंगिक प्रतीत होते हैं। गांधी ने राजनीति में 'नए मनुष्य' और 'नई नैतिक समाज-व्यवस्था' की कल्पना की जो भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा का आधुनिक पुनर्पाठ थी इसलिए यह अध्ययन न केवल ऐतिहासिक और दार्शनिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है बल्कि वर्तमान राजनीतिक विमर्श में भी नैतिकता, अहिंसा और मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना के लिए आवश्यक है।

भारतीय ज्ञान परंपरा का स्वरूप

भारतीय ज्ञान परंपरा अत्यंत प्राचीन, बहुआयामी, सतत विकसित और अनुभव-आधारित वैचारिक धारा है जिसने हजारों वर्षों तक भारतीय समाज, संस्कृति, दर्शन, विज्ञान, राजनीति, नैतिकता और आध्यात्मिक जीवन को दिशा प्रदान की है। इस परंपरा की सबसे प्रमुख विशेषता यह है कि यह केवल बौद्धिक चिंतन तक सीमित नहीं बल्कि व्यवहार, अनुभव, साधना और जीवन-व्यवहार में गहराई से निहित है। भारतीय ज्ञान की जड़ें वेदों, उपनिषदों, स्मृतियों, पुराणों, दर्शनों, आगम-निगम साहित्य से लेकर जैन-बौद्ध परंपराओं, भक्ति आंदोलन, सूफी परंपराओं, लोक-ज्ञान तथा आधुनिक भारतीय विचारकों की चिंतन परंपरा तक विस्तारित हैं। इस ज्ञान परंपरा

का मूल स्वभाव समग्रता, आध्यात्मिकता, नैतिकता, सार्वभौमिकता और मानव-कल्याण की भावना पर आधारित है। यहाँ ज्ञान को केवल सूचना या बौद्धिक अभ्यास नहीं बल्कि 'मुक्ति' और 'सत्य की खोज' का माध्यम माना गया है।

भारतीय ज्ञान परंपरा का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष उसका अद्वैतवादी और समन्वयकारी दृष्टिकोण है। उपनिषदों में वर्णित ब्रह्म-आत्म-एकत्व की अवधारणा, गीता का निष्काम कर्मयोग, जैन धर्म का अहिंसा और अपरिग्रह मार्ग, बौद्ध धर्म का मध्यमार्ग और करुणा सिद्धांत तथा भक्ति परंपरा की समानता और मानव-प्रेम की धारा सभी इस बात के प्रमाण हैं कि भारतीय परंपरा भेद नहीं बल्कि एकत्व, संतुलन और सामंजस्य पर आधारित है। यह परंपरा जीवन को एक संपूर्णता में देखने पर बल देती है- जहाँ भौतिक, आध्यात्मिक, नैतिक और सामाजिक आयाम परस्पर जुड़े हुए हैं इसलिए भारतीय ज्ञान प्रणाली में राजनीति, धर्म, समाज, अर्थशास्त्र और नैतिकता एक-दूसरे से अलग नहीं बल्कि एक-दूसरे के पूरक माने गए हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा का एक विशिष्ट स्वरूप उसकी नैतिकता-केन्द्रित दृष्टि है। यहाँ ज्ञान का मूल्य उसके उपयोग, आचरण और समाज हित में निहित माना गया है इसलिए सत् (सत्य), ऋत (नैतिक नियम), अहिंसा, करुणा, तप, दान, संयम, मैत्री और सेवा जैसे मूल्यों को ज्ञान का आधार माना गया। इसी कारण भारतीय चिंतन में 'धर्म' केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं बल्कि नैतिक कर्तव्य और जीवन-दर्शन का संकेतक है। यह धारणाएँ न केवल दर्शनशास्त्र में बल्कि राजनीति, शिक्षा, संस्कृति और सामाजिक संरचना में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। यही कारण है कि महात्मा गांधी जैसे आधुनिक विचारकों ने भारतीय राजनीति में सत्य, अहिंसा और नैतिकता को मूलभूत आधार के रूप में पुनः स्थापित किया।

भारतीय ज्ञान परंपरा की एक ओर अनूठी विशेषता यह है कि यह अनुभव-आधारित और व्यवहारिक है। ऋषि-मुनियों की तपस्या, साधना और प्रत्यक्ष अनुभूति पर आधारित ज्ञान न केवल शास्त्रों में संकलित हुआ बल्कि लोक-जीवन, कला, साहित्य, संगीत, योग, आयुर्वेद, ज्योतिष, गणित और वास्तुशास्त्र के रूप में भी विकसित होता रहा। इस परंपरा में ज्ञान स्थिर नहीं बल्कि गतिशील है-निरंतर पुनर्व्याख्या, संवाद और अनुभव से विकसित होता है। इसलिए वेदांत के चिंतन से लेकर आधुनिक वैज्ञानिक विश्लेषण तक भारतीय ज्ञान परंपरा निरंतर समृद्ध होती रही।

भारतीय ज्ञान परंपरा का एक महत्वपूर्ण पक्ष बहुलता और सहिष्णुता है। यहाँ अनेक दर्शन- सांख्य, योग, न्याय,

वैशेषिक, मीमांसा, वेदांत, जैन दर्शन और बौद्ध दर्शन अपनी-अपनी भिन्न मान्यताओं के साथ विकसित हुए परन्तु सभी ने ज्ञान की खोज को उच्चतम लक्ष्य माना। विचारों की इस विविधता ने भारतीय समाज में सहिष्णुता, संवाद और वाद-संवाद की परंपरा को मजबूत किया। यही परंपरा बाद में भारतीय राजनीति में भी दिखाई देती है जहाँ बहुलता और विविधता को स्वीकार करना लोकतांत्रिक मूल्यों का आधार बनाता है।

समग्रतः भारतीय ज्ञान परंपरा का स्वरूप व्यापक, गहन, बहुलतावादी और मानववादी है। यह परंपरा केवल इतिहास का विषय नहीं बल्कि एक जीवित धारा है जो आज भी भारतीय चिंतन, सामाजिक मूल्यों, सांस्कृतिक व्यवहार और राजनीतिक अवधारणाओं को प्रभावित करती है। इसकी यही विशेषताएँ महात्मा गांधी के राजनीतिक विचारों में गहरे रूप में प्रतिबिंबित होती हैं जहाँ भारतीय ज्ञान परंपरा ने सत्य, अहिंसा, स्वराज, करुणा और नैतिक राजनीति को दिशा और दर्शन प्रदान किया।

महात्मा गांधी का राजनीतिक चिंतन-एक वैचारिक आधार

महात्मा गांधी का राजनीतिक चिंतन भारतीय राजनीति में एक अद्वितीय और नैतिक-आध्यात्मिक आधार पर स्थापित दर्शन है जो पारंपरिक सत्ता-केन्द्रित राजनीति से भिन्न रूप में उभरता है। गांधी का मानना था कि राजनीति को नैतिकता, सत्य, करुणा, सेवा और आत्मसंयम से अलग नहीं किया जा सकता। उनकी दृष्टि में राजनीति मनुष्य के अंतःकरण और सामाजिक कर्तव्यों से गहराई से जुड़ी हुई प्रक्रिया है। यही कारण है कि गांधी के राजनीतिक विचारों का आधार किसी पश्चिमी राजनीतिक सिद्धांत में नहीं बल्कि भारतीय ज्ञान परंपरा, उपनिषदों की विचारधारा, भगवद्गीता के निष्काम कर्मयोग, जैन-बौद्ध नैतिकता, लोक-संस्कृति और भारतीय आध्यात्मिक अनुभव में निहित है। गांधी ने सत्ता को लक्ष्य नहीं बल्कि समाज-सुधार और मानव-कल्याण को राजनीति का मूल उद्देश्य माना।

गांधी के राजनीतिक चिंतन का प्रथम और सबसे महत्वपूर्ण आधार सत्य है। उनके लिए सत्य केवल नैतिक मूल्य नहीं बल्कि परम-तत्त्व है जिसके आधार पर व्यक्तिगत जीवन और सामाजिक व्यवस्था दोनों को संचालित होना चाहिए। गांधी ने "सत्य ही ईश्वर है" कहकर भारतीय दर्शन की उस उपनिषदिक परंपरा को राजनीति में स्थापित किया जिसमें सत्य को सर्वोच्च आस्था माना गया है। सत्य के साथ अहिंसा का सिद्धांत, गांधी की राजनीति का दूसरा मुख्य स्तंभ है। अहिंसा उनके लिए किसी कमजोर मनोवृत्ति का परिणाम नहीं बल्कि एक

सशक्त नैतिक शक्ति थी जो अन्याय के विरुद्ध संघर्ष का सर्वोत्तम साधन बन सकती है। जैन और बौद्ध दर्शन से प्रेरित यह अहिंसा गांधी के राजनीतिक व्यवहार, आंदोलन, प्रतिरोध और समाज-सुधार का आधार बनी।

गांधी के राजनीतिक दर्शन में स्वराज की अवधारणा केवल राजनैतिक स्वतंत्रता का नाम नहीं बल्कि आत्मशासन और आत्मानुशासन का व्यापक सिद्धांत है। उनके अनुसार जब तक व्यक्ति स्वयं पर नियंत्रण, नैतिकता, सादगी और आत्मनिर्भरता को जीवन में स्थापित नहीं करेगा तब तक वास्तविक स्वराज संभव नहीं इसलिए गांधी का स्वराज राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ-साथ सामाजिक सुधार और आत्मिक उन्नति से भी जुड़ा हुआ है। इसे उन्होंने "सबका स्वराज" के रूप में परिभाषित किया जिसमें हर व्यक्ति, हर वर्ग और हर समुदाय की सहभागिता आवश्यक होती है।

इसी प्रकार गांधी के राजनीतिक चिंतन में स्वदेशी और आत्मनिर्भरता का सिद्धांत महत्वपूर्ण है। स्वदेशी उनके लिए केवल वस्त्र पहनने या वस्तुओं के प्रयोग का विचार नहीं था बल्कि भारतीय आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक स्वतंत्रता का चिन्ह था। चरखा, खादी और ग्रामोद्योग आंदोलनों के माध्यम से गांधी ने ग्रामीण भारत को राजनीति और अर्थव्यवस्था का केंद्र बनाया। उनका मानना था कि भारत का विकास तभी संभव है जब गांव आत्मनिर्भर हों और आर्थिक शोषण से मुक्त हों। यह दृष्टिकोण भारतीय लोक-जीवन, श्रम-नैतिकता और परंपरागत सामूहिकता से गहराई से प्रभावित था।

गांधी के राजनीतिक चिंतन में ट्रस्टीशिप (जन्मेजममौपच) का सिद्धांत भारतीय आध्यात्मिकता और सामाजिक न्याय की अनूठी अभिव्यक्ति है। उन्होंने धन-संपत्ति के स्वामित्व को व्यक्तिगत अधिकार के बजाय सामाजिक उत्तरदायित्व के रूप में देखा। उनका विश्वास था कि संपन्न व्यक्ति समाज का ट्रस्टी है और उसे अपनी संपत्ति का उपयोग सार्वजनिक हित में करना चाहिए। यह अवधारणा भारतीय दार्शनिक परंपरा के 'त्याग', 'परिग्रह-निरोध' और 'लोकसंग्रह' की विचारधारा से प्रभावित थी।

गांधी की राजनीति का एक अन्य वैचारिक आधार नैतिकता-प्रधान राजनीति है। गांधी का मानना था कि राजनीति में नैतिक आदर्शों के बिना स्थायी स्वतंत्रता और सामाजिक न्याय की स्थापना संभव नहीं इसलिए उन्होंने राजनीतिक आंदोलनों में व्यक्तिगत चरित्र, सत्यनिष्ठा, संयम, तप और सेवा भाव को अनिवार्य माना। गांधी की राजनीति में साधन और साध्य की पवित्रता का सिद्धांत इसी नैतिक दृष्टि का विस्तार

था। उनका कहना था कि "अन्यायपूर्ण साधन कभी न्यायपूर्ण परिणाम पैदा नहीं कर सकते।"

समग्रतः गांधी का राजनीतिक चिंतन भारतीय परंपरा की आध्यात्मिकता, नैतिकता और मानव-समता के सिद्धांतों पर आधारित है। यह चिंतन राजनीति को शोषण, हिंसा और सत्ता-संघर्ष से मुक्त कर, उसे सेवा, सत्य, अहिंसा और कल्याण के पथ पर ले जाने की प्रेरणा देता है। इस प्रकार गांधी का राजनीतिक दर्शन न केवल भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को दिशा देने वाला सिद्धांत था बल्कि आज भी वैश्विक राजनीति, मानवाधिकार, लोकतंत्र और नैतिक नेतृत्व के लिए एक प्रकाश-स्तंभ के रूप में उपस्थित है।

भारतीय ज्ञान परंपरा और गांधी के राजनीतिक विचार : अंतर्संबंध

महात्मा गांधी के राजनीतिक विचारों का वास्तविक आधार भारतीय ज्ञान परंपरा की उस गहरी आध्यात्मिक-नैतिक धारा में निहित है जिसने हजारों वर्षों से भारतीय समाज को दिशा प्रदान की है। भारतीय चिंतन में सत्य, अहिंसा, आत्मसंयम, दया, करुणा, लोककल्याण, आत्मनिर्भरता और त्याग जैसे मूल्य सदैव केंद्रीय रहे हैं। गांधी का राजनीतिक दर्शन इन्हीं भारतीय मूल्यों का आधुनिक, व्यवहारिक और राजनीतिक पुनर्पाठ था। उन्होंने भारतीय परंपरा के सार को आधुनिक राष्ट्रीय संघर्ष की आवश्यकताओं के अनुरूप रूपांतरित करके उसे जनांदोलनों, सामाजिक सुधारों और स्वतंत्रता संग्राम का वैचारिक आधार बनाया। इस प्रकार भारतीय ज्ञान परंपरा और गांधी के राजनीतिक विचार परस्पर पूरक, सह-अनुक्रमित और एक-दूसरे का आधार बनकर उभरते हैं।

गांधी पर सबसे अधिक प्रभाव उपनिषदों और वेदान्त की उस अवधारणा का रहा जिसमें सत्य को ब्रह्म और अंतिम सत्य के रूप में स्वीकारा गया है। गांधी ने "सत्य ही ईश्वर है" का सिद्धांत इसी उपनिषदिक भावना से ग्रहण किया। उनके लिए सत्य केवल व्यक्तिगत आचरण का नियम नहीं बल्कि राजनीति में भी नैतिकता का मूल तत्व था। सत्य पर आधारित राजनीति को वे भारतीय संस्कृति की सर्वोच्च देन मानते थे। इसी प्रकार जैन और बौद्ध दर्शन से उन्होंने अहिंसा, करुणा, अपरिग्रह और आत्मसंयम की प्रेरणा ग्रहण की। जैन धर्म के अहिंसा सिद्धांत ने उनके सत्याग्रह को और बौद्ध दर्शन की करुणा ने उनके जन-आंदोलनों को मानवीय आयाम प्रदान किया। इस अहिंसात्मक राजनीति का मूल भारतीय अध्यात्म में ही निहित था जिसने गांधी को हिंसा-रहित प्रतिरोध की अनोखी पद्धति विकसित करने में सक्षम बनाया।

भगवद्गीता का कर्मयोग, गांधी के राजनीतिक सोच का सबसे महत्वपूर्ण आधार था। गीता के निष्काम कर्म, आत्मसंयम और धर्मयुक्त कर्मयोग की अवधारणाएँ गांधी के राजनीतिक व्यवहार में स्पष्ट दिखाई देती हैं। उन्होंने गीता को "आध्यात्मिक मार्गदर्शक" माना और उसके विचारों को सामाजिक एवं राजनीतिक संघर्षों में प्रयुक्त किया। निष्काम कर्म का भाव उन्हें यह समझ देता है कि संघर्ष सत्ता-प्राप्ति के लिए नहीं बल्कि सत्य के लिए होना चाहिए। इस प्रकार गीता ने गांधी को सेवा, तप और आत्मबल पर आधारित राजनीति की दिशा प्रदान की।

गांधी के विचारों में भक्ति आंदोलन की समतावादी और मानव-केन्द्रित परंपरा का भी गहरा प्रभाव है। कबीर, नानक, तुलसी, मीरा और दादू जैसे संतों की लोक-संस्कृति पर आधारित भक्ति धारा ने गांधी के भीतर जातिगत भेदभाव, अस्पृश्यता और सामाजिक अन्याय के प्रति गहरी संवेदना पैदा की। गांधी का "हरिजन आंदोलन", उनकी समानता-आधारित राजनीति, और धार्मिक सौहार्द की स्थापना इसी भक्ति परंपरा की देन है। भक्ति आंदोलन की तरह गांधी भी धार्मिक कट्टरता से दूर, प्रेम, सहिष्णुता और समन्वय की राजनीति को अपनाते हैं।

भारतीय लोक-संस्कृति और ग्राम्य जीवन ने गांधी के राजनीतिक दर्शन में ग्राम-स्वराज और आत्मनिर्भरता की अवधारणा को जन्म दिया। भारतीय ज्ञान परंपरा के अनुसार ग्राम समाज ही भारत की आत्मा है इसलिए गांधी ने राजनीति में गांवों के पुनर्निर्माण, खादी, ग्रामोद्योग, श्रम-गौरव और स्वदेशी को स्थान दिया। यह दृष्टिकोण भारतीय आर्थिक परंपरा के 'स्वावलंबन' सिद्धांत से सीधे जुड़ा हुआ है। ग्रामीण भारत पर आधारित उनका राजनीतिक कार्यक्रम, भारतीय ज्ञान परंपरा के सामाजिक-आर्थिक मूल्यों की पुनर्स्थापना था।

गांधी के धनोपार्जन और सामाजिक न्याय संबंधी विचारों में भी भारतीय परंपरा का महत्वपूर्ण योगदान है। उनका ट्रस्टीशिप सिद्धांत वेदांत और जैन-बौद्ध मूल्यों में निहित उस नैतिकता की आधुनिक अभिव्यक्ति है जिसमें धन को व्यक्तिगत संपत्ति नहीं बल्कि सामाजिक संसाधन माना गया है। यह त्याग, सेवा और लोक-कल्याण पर आधारित दृष्टि भारतीय धर्म-शास्त्रों की उस परंपरा से मेल खाती है जिसमें समाज के हित को सर्वोपरि माना गया है।

समग्रतः गांधी के राजनीतिक विचार भारतीय ज्ञान परंपरा की जीवंत निरंतरता हैं। उन्होंने भारतीय आध्यात्मिकता, नैतिकता और सांस्कृतिक मूल्यों को आधुनिक राजनीति के केंद्र में स्थापित किया। गांधी के चिंतन में भारतीय परंपरा केवल ऐतिहासिक संदर्भ नहीं बल्कि नैतिक ऊर्जा का स्रोत, समन्वय

का आधार और सत्य-अहिंसा जैसी वैश्विक अवधारणाओं की आत्मा है इसलिए गांधी का राजनीतिक दर्शन भारतीय ज्ञान परंपरा का आधुनिक, जनोन्मुखी और सार्वभौमिक व्याख्यान है जो आज भी भारतीय राजनीति और विश्व-मानवता को नई दिशा प्रदान करता है।

गांधी की राजनीतिक गतिविधियों में भारतीय ज्ञान परंपरा की अभिव्यक्ति

महात्मा गांधी की राजनीतिक गतिविधियाँ भारतीय ज्ञान परंपरा की गहरी आध्यात्मिक, नैतिक और सांस्कृतिक जड़ों की स्पष्ट अभिव्यक्ति प्रस्तुत करती हैं। गांधी ने अपने प्रत्येक राजनीतिक आंदोलन, प्रतिरोध, सामाजिक सुधार और जन-कार्यक्रम को भारतीय दर्शन के सत्य, अहिंसा, करुणा, स्वावलंबन, स्वराज, आत्मसंयम और लोककल्याण जैसे मूलभूत सिद्धांतों पर आधारित किया। उनकी राजनीतिक पद्धति किसी पश्चिमी क्रांति, हिंसक प्रतिरोध या सत्ता-प्राप्ति की राजनीति से प्रेरित नहीं थी बल्कि भारतीय उपनिषदों, भगवद्गीता, जैन-बौद्ध दर्शन, भक्ति परंपरा, लोक-जीवन और ग्राम्य नैतिकता में निहित मूल्यों से संचालित थी। इस प्रकार गांधी की राजनीति में भारतीय ज्ञान परंपरा केवल वैचारिक आधार नहीं, बल्कि उनकी प्रत्येक राजनीतिक गतिविधि का संचालन-तत्व थी।

सबसे पहले सत्याग्रह गांधी की राजनीति में भारतीय ज्ञान परंपरा की सर्वाधिक स्पष्ट अभिव्यक्ति है। सत्याग्रह का आधार सत्य और अहिंसा है जो भारतीय अध्यात्म के केन्द्रीय तत्व हैं। सत्याग्रह में अन्याय के समक्ष आत्मबल, नैतिक साहस और संघर्ष की शुचिता का महत्व होता है-ये सभी उपनिषदिक और जैन-बौद्ध दर्शन से प्रेरित हैं। गांधी का मानना था कि "अहिंसा पर आधारित सत्याग्रह भारतीय आत्मा की शक्ति है" क्योंकि यह संघर्ष को हिंसा से मुक्त करके उसे नैतिकता के स्तर पर ले आता है। नमक सत्याग्रह, असहयोग आंदोलन, चम्पारण सत्याग्रह और खेड़ा आंदोलन सभी भारतीय ज्ञान परंपरा के सत्य-अहिंसा सिद्धांत का क्रियात्मक रूप थे।

असहयोग और नागरिक अवज्ञा आंदोलन भारतीय ज्ञान परंपरा से प्राप्त 'धर्म-अनुरूप आचरण' और 'अन्याय के समक्ष शांतिपूर्ण प्रतिरोध' के सिद्धांतों का व्यवहारिक रूप था। उपनिषदों और महाभारत में वर्णित 'अधर्म के विरोध' का नैतिक कर्तव्य गांधी के राजनीतिक प्रतिरोध में दिखाई देता है। गांधी कहते हैं कि यदि शासन अन्यायपूर्ण हो तो नागरिक का नैतिक कर्तव्य है कि वह उसका सहयोग न करे। इस प्रकार असहयोग का सिद्धांत भारतीय धर्मशास्त्रीय परंपरा के 'अन्याय के त्याग' की आधुनिक व्याख्या है।

गांधी की राजनीतिक गतिविधियों में स्वदेशी और खादी आंदोलन भारतीय आर्थिक और दार्शनिक परंपरा की स्पष्ट अभिव्यक्ति थी। भारतीय ज्ञान परंपरा में आत्मनिर्भरता, श्रम-गौरव, संतुलित उपभोग, स्थानीय उत्पादन और "स्वावलंबन" को सदैव महत्वपूर्ण माना गया है। गांधी ने इन मूल्यों को खादी, चरखा और ग्रामोद्योग के रूप में जनता के जीवन से जोड़ा। स्वदेशी केवल आर्थिक नीति नहीं थी बल्कि भारतीय संस्कृति की 'स्व-शक्ति', 'स्वाधीनता' और 'स्वावलंबन' की पुनर्स्थापना थी। यह आंदोलन भारतीय लोक-संस्कृति, श्रमिक परंपरा और ग्रामीण आत्मनिर्भरता के सिद्धांतों का राजनीतिक रूप बन गया।

गांधी की सामाजिक-राजनीतिक गतिविधियों में अस्पृश्यता उन्मूलन और सामाजिक सुधार आंदोलन भारतीय ज्ञान परंपरा के मानव-समता और करुणा के सिद्धांत की अभिव्यक्ति है। भक्ति आंदोलन, उपनिषद, बौद्ध धर्म और कबीर-पंथ में वर्णित समानता और मानव-गरिमा की धारा गांधी के सुधार आंदोलनों में पुनर्जीवित होती है। 'हरिजन आंदोलन' इस बात का उदाहरण है कि गांधी राजनीतिक स्तर पर भी समाज की नैतिक पुनर्रचना को आवश्यक मानते थे। गांधी के लिए सामाजिक समता राजनीतिक स्वतंत्रता का अनिवार्य अंग था-यह दृष्टि भारतीय ज्ञान परंपरा की समतावादी विरासत से ही जन्म लेती है।

गांधी के ग्राम-स्वराज और पंचायती राज के विचार भारतीय लोक-ज्ञान और ग्राम्य परंपरा की जीवंत अभिव्यक्ति हैं। भारतीय संस्कृति में ग्राम केवल प्रशासनिक इकाई नहीं बल्कि आत्मनिर्भर, सामुदायिक और नैतिक जीवन का केंद्र माना गया है। गांधी ने इसी भारतीय अवधारणा को राजनीतिक स्वरूप दिया और 'नीचे से ऊपर' शक्ति-प्रवाह की नीति अपनाई। ग्राम-स्वराज में स्वतंत्रता, सहयोग, श्रम, स्वावलंबन, नैतिकता और लोककल्याण जैसे भारतीय मूल्यों का समावेश था।

गांधी के ट्रस्टीशिप सिद्धांत में भी भारतीय ज्ञान परंपरा की गहरी छाप स्पष्ट है। उपनिषदों में वर्णित 'त्यागेनैके अमृतत्वमानशुः' (त्याग के द्वारा ही अमृतत्व प्राप्त होता है) की अवधारणा, जैन-बौद्ध परंपरा का अपरिग्रह तथा गीता का लोकसंग्रह-ये सभी गांधी के आर्थिक नैतिकता-संबंधी विचारों को प्रेरित करते हैं। ट्रस्टीशिप में धन-संपत्ति को व्यक्तिगत संपत्ति नहीं, बल्कि सामाजिक दायित्व के रूप में देखा गया जिससे समाज में संतुलन और न्याय की स्थापना हो सके।

गांधी की सभी राजनीतिक गतिविधियाँ-सत्याग्रह, असहयोग, स्वदेशी, सामाजिक सुधार, खादी आंदोलन, ग्राम-स्वराज, धार्मिक सहिष्णुता और आर्थिक नैतिकता- भारतीय

ज्ञान परंपरा की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति हैं। गांधी ने इस परंपरा को केवल चिंतन के रूप में नहीं बल्कि जनता के व्यवहार और राजनीतिक संघर्ष में जीवंत रूप से लागू किया। उनकी राजनीति भारतीय संस्कृति की आत्मा, नैतिकता और आध्यात्मिकता का आधुनिक और प्रभावी रूप थी जिसने न केवल भारत के स्वतंत्रता आंदोलन को दिशा दी बल्कि पूरी दुनिया को एक नई नैतिक-राजनीतिक पद्धति का मार्ग दिखाया।

समकालीन संदर्भ में गांधी का राजनीतिक चिंतन

महात्मा गांधी का राजनीतिक चिंतन आज के वैश्विक, राष्ट्रीय और सामाजिक परिदृश्य में पहले से अधिक प्रासंगिक प्रतीत होता है। आधुनिक युग की राजनीति जहां बढ़ती हिंसा, भ्रष्टाचार, सत्ता-केंद्रित मानसिकता, उपभोक्तावाद, आर्थिक असमानता और नैतिक मूल्यों के पतन का सामना कर रही है वहाँ गांधी द्वारा प्रतिपादित सत्य, अहिंसा, नैतिक राजनीति, सामाजिक समता, स्वावलंबन और ग्राम-स्वराज जैसे सिद्धांत पुनः विश्व को एक नए मार्ग की ओर संकेत करते हैं। गांधी का राजनीतिक दर्शन केवल बीसवीं सदी के भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का मार्गदर्शन भर नहीं था बल्कि मानव सभ्यता के लिए एक नैतिक-राजनीतिक आदर्श स्थापित करता है जो आज भी लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं के स्वस्थ संचालन के लिए अत्यंत आवश्यक है।

समकालीन वैश्विक राजनीति में बढ़ती हिंसा और संघर्ष के बीच गांधी का अहिंसात्मक प्रतिरोध (छवद-अपवसमदज त्मेपेजंदबम) एक प्रभावी वैकल्पिक राजनीतिक के रूप में उभरता है। कई देशों में नागरिक अधिकार आंदोलनों, सामाजिक न्याय अभियानों और लोकतांत्रिक संघर्षों ने गांधी के सत्याग्रह मॉडल को अपनाया है। मार्टिन लूथर किंग, नेल्सन मंडेला, आंग सान सू को सहित अनेक सामाजिक नेताओं ने गांधी के अहिंसात्मक मार्ग को आधुनिक संघर्षों के लिए सर्वोत्तम माना। वर्तमान में भी जलवायु न्याय आंदोलनों, मानवाधिकार अभियानों और विविध सामाजिक आंदोलनों में गांधीवादी पद्धति को अपनाया जा रहा है जिससे सिद्ध होता है कि गांधी का राजनीतिक चिंतन आज भी प्रभावी और व्यवहारिक है।

भारत के समकालीन राजनीतिक संदर्भ में गांधी का नैतिक-राजनीतिक आदर्श अत्यंत आवश्यक हो गया है। लोकतंत्र के स्वस्थ संचालन के लिए सत्यनिष्ठा, पारदर्शिता, जवाबदेही और नैतिक नेतृत्व जैसे मूल्य अनिवार्य हैं-ये सभी गांधी की राजनीतिक दृष्टि के मूल घटक हैं। आज जब राजनीति अक्सर सत्ता-प्रतिस्पर्धा, व्यक्तिगत लाभ और भ्रष्टाचार के प्रभाव में कमजोर पड़ती दिखाई देती है, तब गांधी के नैतिक दर्शन से

राजनीति को पुनः मूल्य-आधारित बनाने की प्रेरणा प्राप्त होती है। गांधी का कहना था कि "साधन की पवित्रता साध्य की पवित्रता से अधिक महत्वपूर्ण है", यह सिद्धांत आज के राजनीतिक परिदृश्य में अत्यंत सार्थक है।

गांधी के चिंतन का समकालीन आयाम स्वावलंबन और आर्थिक न्याय के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण है। वैश्वीकरण, बाजारवाद और लगातार बढ़ती आर्थिक असमानता ने समाज में नई चुनौतियाँ पैदा की हैं। गांधी का स्वदेशी भाव, ग्रामोद्योग आधारित अर्थव्यवस्था और ट्रस्टीशिप का सिद्धांत आज भी टिकाऊ अर्थव्यवस्था, स्थानीय उद्योगों के विकास, रोजगार सृजन और धन के नैतिक उपयोग के लिए प्रभावी मार्ग प्रदान करता है। आज जब जलवायु परिवर्तन और संसाधन संकट वैश्विक समस्या बन चुके हैं तब गांधी का "कम उपभोग-अधिक संतोष-संतुलित जीवन" का विचार सतत विकास (नेजपंदइसम कमअमसवचउमदज) की वैकल्पिक नींव प्रदान करता है।

समकालीन समाज में सामाजिक न्याय, जाति-भेद, लैंगिक समानता और मानवाधिकारों के प्रश्नों में भी गांधीवादी दर्शन अत्यंत उपयोगी है। गांधी का हरिजन आंदोलन, अस्पृश्यता उन्मूलन और सामाजिक सुधार कार्यक्रम समाज में समता और सम्मान की भावना स्थापित करने के लिए प्रासंगिक हैं। आज जब जातिगत भेदभाव, धार्मिक कट्टरता और सामाजिक विभाजन के प्रश्न पुनः उभर रहे हैं, तब गांधी के प्रेम, सहिष्णुता, समन्वय और मानवता के सिद्धांत समाज को एक नई दिशा प्रदान करते हैं।

अंततः ग्राम-स्वराज का गांधीवादी मॉडल आधुनिक लोकतंत्र और स्थानीय शासन की मजबूती के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। आज के विकेंद्रीकरण, पंचायत-राज, स्थानीय प्रशासन और समुदाय-आधारित विकास की अवधारणाएँ गांधी के ग्राम-स्वराज से ही प्रेरित हैं। यह मॉडल बताता है कि वास्तविक लोकतंत्र तभी मजबूत होगा जब शक्ति का प्रवाह नीचे से ऊपर की ओर होगा, और जब ग्रामीण समाज आत्मनिर्भर एवं सक्षम बनेगा।

समग्र रूप से देखा जाए तो गांधी का राजनीतिक चिंतन आज केवल एक ऐतिहासिक अवधारणा नहीं बल्कि समकालीन राजनीति, अर्थव्यवस्था और समाज की समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करने वाली एक ऊर्जा-धारा है। सत्य, अहिंसा, स्वराज, स्वदेशी, नैतिकता और मानवता जैसे उनके मूल सिद्धांत आज भी मानव सभ्यता को नैतिक और स्थायी दिशा देने में सक्षम हैं इसलिए समकालीन संदर्भ में गांधी का राजनीतिक चिंतन पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण और प्रासंगिक बन गया है।

निष्कर्ष

महात्मा गांधी के राजनीतिक चिंतन और उनकी गतिविधियों का व्यापक विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि उनकी समस्त राजनीति भारतीय ज्ञान परंपरा की जड़ों में गहराई से निहित थी। गांधी ने राजनीति को सत्ता-संघर्ष या प्रतिद्वंद्विता की प्रक्रिया के रूप में नहीं बल्कि नैतिकता, मानवता, सत्य, अहिंसा और लोककल्याण पर आधारित एक उच्चतर आध्यात्मिक साधना के रूप में देखा। उनकी राजनीति का आधार जिन मूल्यों पर निर्मित था-जैसे सत्य, अहिंसा, स्वराज, स्वदेशी, आत्मसंयम, जन्मेजममौपच, करुणा, समानता और मानव-सेवा वे सभी भारतीय वेदांत, उपनिषद, गीता, जैन-बौद्ध दर्शन, भक्ति परंपरा और लोक-संस्कृति से प्रत्यक्ष रूप से सम्बद्ध हैं। इस प्रकार गांधी का राजनीतिक दर्शन भारतीय ज्ञान परंपरा का आधुनिक और व्यवहारिक रूप है जिसमें प्राचीन भारतीय मूल्य न केवल पुनर्जीवित होते हैं बल्कि आधुनिक राजनीतिक संघर्षों के लिए मार्गदर्शक सिद्धांत भी प्रदान करते हैं।

सत्याग्रह, असहयोग, खादी और स्वदेशी आंदोलन, अस्पृश्यता उन्मूलन, ग्राम-स्वराज, सामाजिक समता और नैतिक नेतृत्व जैसे गांधी के कार्यक्रम भारतीय ज्ञान परंपरा की जीवंत अभिव्यक्तियाँ हैं। इन गतिविधियों के माध्यम से गांधी ने यह सिद्ध किया कि भारतीय दर्शन में निहित मूल्य केवल आध्यात्मिक साधना तक सीमित नहीं बल्कि वे राजनीतिक और सामाजिक परिवर्तन का आधार भी बन सकते हैं। गांधी की राजनीति ने भारतीय जनता के भीतर आत्मबल, नैतिक साहस और सांस्कृतिक चेतना को जागृत किया और स्वतंत्रता संग्राम को विश्व के सबसे बड़े अहिंसात्मक आंदोलन के रूप में स्थापित किया।

समकालीन समय में जब राजनीति नैतिक संकट, हिंसा, असमानता, उपभोक्तावाद और विभाजनकारी प्रवृत्तियों का सामना कर रही है, गांधी का राजनीतिक चिंतन ओर भी महत्वपूर्ण हो जाता है। उनका स्वावलंबन, स्वदेशी, सामाजिक न्याय, पर्यावरण-संतुलन, मानवाधिकार और ग्राम-केन्द्रित विकास का महडल आज के वैश्वीकरण, आर्थिक विषमता और जलवायु संकट से जूझती दुनिया के लिए वैकल्पिक मार्ग प्रस्तुत करता है। गांधी का यह विश्वास कि "नैतिकता के बिना राजनीति अधूरी है" आज के राजनीतिक परिदृश्य में भी उतना ही प्रासंगिक है जितना उनके समय में था।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि गांधी का राजनीतिक दर्शन भारतीय ज्ञान परंपरा की निरंतरता, गहराई और सार्वभौमिकता का प्रत्यक्ष प्रमाण है। उन्होंने भारतीय संस्कृति की आत्मा को आधुनिक राष्ट्रीय आंदोलन में रूपांतरित

किया और विश्व को एक नैतिक-राजनीतिक जीवन पद्धति प्रदान की। गांधी का चिंतन केवल भारत की स्वतंत्रता की कहानी नहीं बल्कि मानव सभ्यता के लिए सत्य, अहिंसा और नैतिकता पर आधारित जीवन और राजनीति का स्थायी संदेश है इसीलिए गांधी और भारतीय ज्ञान परंपरा का यह अंतर्संबंध भविष्य की राजनीति, समाज और मानवता के लिए प्रेरणा का अखंड स्रोत बना रहेगा।

संदर्भ

- गांधी, मोहनदास कर्मचन्द। हिंद स्वराज. नवजीवन प्रकाशन, १९३८।
- अय्यर, राघवना। गांधी का नैतिक और राजनीतिक चिंतन. अहक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, १९७३।
- परेल, एंथनी जे. गांधी का दर्शन और सामंजस्य की खोज. केम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, २००६।
- चटर्जी, मागरिटा। गांधी का धार्मिक चिंतन. यूनिवर्सिटी अहफ नोट-डेम प्रेस, १९८३।
- पारेख, भीखु। "गांधी का राजनीतिक दर्शन।" महडर्न रिव्यू, वहल्यूम ४३, १९८१, पृ. ३४-४८।
- हार्डीमन, डेविड। "खादी और स्वदेशी आंदोलन का गांधीवादी पुनर्पाठ।" सोशल एंड पहलिटिकल थहट जर्नल, वहल्यूम १२, संख्या ३, १९९८, पृ. १२१-१३६।
- ब्राउन, जूडिथ एम. "गांधी और नागरिक प्रतिरोध की राजनीति।" साउथ एशिया जर्नल, वहल्यूम १२, संख्या १, १९८६, पृ. २५-४४।
- भगवद्गीता. अनुवाद : डह. एस. राधाकृष्णन, हार्पर कहलिन्स, १९६३।
- जैन सूत्र. अनुवाद : हरमन जैकोबी, क्लेरेंडन प्रेस, १८८४।
- चक्रवर्ती, बिद्युता। महात्मा गांधी का सामाजिक-राजनीतिक चिंतन. रूटलेज, २०२१।